14

सब बातों का पहली बार

बाइबल पाठ #4

III. यीशु की सेवकाई का आरम्भ (क्रमशः)।
   घ. यीशु के प्रारंभिक चेले (यहूदिया में) (यूहन्ना 1:35-51)।
   ड. यीशु का पहला आश्चर्यकर्म (काना गलील में)(यूहन्ना 2:1-11)।
   च. कफरनहूम में यीशु का पहला ठिकाना (गलील में) (यूहन्ना 2:12)।

IV. पहले से दूसरे फसह तक।
   क. यीशु का सेवकाई का पहला फसह।
      1. मंदिर को शुद्ध करना (यूहन्ना 2:13-25)।
      2. नीकुदेमुस को सिखाना (यूहन्ना 3:1-21)।
   ख. यहूदिया में प्रथम सेवकाई (और यूहन्ना की और गवाही) (यूहन्ना 3:22-36)।

परिचय

कहते हैं कि हर चीज़ का पहली बार आवश्य होता है। पिछले पाठ में, हमने यीशु की सार्वजनिक सेवकाई की कई ''पहली बातें'' देखी थीं, परन्तु यह पाठ उनसे भरा पड़ा है।

मसीह की सेवकाई के प्रारम्भिक दिनों को ''गुमनामी का काल'' कहा गया है। सहदर्शी (सिनोप्टिक) सुसमाचार लेखकों ने यीशु की सार्वजनिक सेवकाई की अपनी रिपोर्ट बाद के उस समय से आरम्भ की, जिसमें गलील में उसकी सफलता पर ज़ोर दिया जाता है। यूहन्ना हमें यीशु के प्रारम्भिक समय के बारे में बताना चाहता था, जब वह कम प्रसिद्ध था।

प्रारम्भिक चेले (यूहन्ना 1:35-51)

''निकट आ गया!'' पाठ यीशु के बारे में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की पहली गवाही कि ''देखो, यह परमेश्वर का मेमना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (आयत 29) से खत्म हुआ था। अगले दिन, यूहन्ना अपने दो चेलों के साथ था। उनमें से एक शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था (आयत 40)। दूसरा सम्भवतया, चौथी पुस्तक का लेखक यूहन्ना था।[1] किसी वजह से यूहन्ना ने अपना नाम नहीं दिया।[2]

जब यीशु आगे बढ़ रहा था, तो उस प्रचारक ने फिर कहा, ''देखो, यह परमेश्वर का मेमना है'' (आयत 36)। उसके दो चेले मसीह के पीछे हो लिए और उन्होंने उसके साथ दिन

बिताया (आयतें 37-39)। बाइबल उनके यीशु के पीछे हो लेने का समय ''दसवां घण्टा'' (आयत 39) बताती है। यदि यूहन्ना समय की यहूदी गणना का इस्तेमाल कर रहा था तो यह समय शाम के लगभग 4 बजे का रहा होगा।[3] यदि उसने रोमी गणना का इस्तेमाल किया तो यह प्रात: 10 बजे का समय था।[4] यह मान लें कि यह अनाम चेला यूहन्ना ही था, तो यह अवसर इतना यादगारी था कि उसने उस समय को ठीक-ठीक याद रखा।

यीशु के साथ कई घण्टे रहने के बाद, अन्द्रियास अपने भाई शमौन को ढूंढ़कर मसीह के पास लाया (आयतें 40-42)। अन्द्रियास की एक विशेषता दूसरों को यीशु के पास लाना था (देखें यूहन्ना 6:8, 9; 12:20-22)। शमौन से कहे अन्द्रियास के शब्द ध्यान देने वाले हैं: ''हम को ख्रिस्तुस अर्थात मसीह मिल गया'' (1:41)। यीशु के प्रारम्भिक चेलों ने उसकी पहचान मसीह के रूप में की, जो वह वास्तव में था (आयतें 45, 49 भी देखें)।[5]

शमौन से मिलने पर यीशु ने उसे बताया कि उसे ''कैफा'' या ''पतरस'' के नाम से जाना जाएगा। उसका पहला नाम अरामी भाषा में था, जबकि दूसरा यूनानी में; दोनों का अर्थ ''चट्टान'' है। यीशु ने इस आदमी में वैसे ही सम्भावनाएं देखीं, जैसे वह हम में से हर एक में देखता है।

अगले दिन, गलील को जाने की तैयारी करते हुए, यीशु ने फिलिप्पुस को बुलाया, जो शायद यूहन्ना का चेला था। चेले बनने के लिए तब से लेकर आज तक मसीह की एक ही पुकार है ''मेरे पीछे हो ले'' (आयत 43)। फिलिप्पुस ने तुरन्त नतनएल नामक अपने एक मित्र को ढूंढ़ा और उसे यीशु के पास ले आया (आयतें 45, 46)।

मसीह ने नतनएल को उसके स्वभाव और उसके जीवन का हाल बताकर स्तब्ध कर दिया (आयतें 47-49)। यीशु ने उसे बताया कि ''तू इस से बड़े-बड़े काम देखेगा'' (आयत 50)।[6] हम पक्का नहीं जानते कि नतनएल कौन था, परन्तु माना जाता है कि वह यीशु के बारह चेलों में से एक, बरतुल्मै ही होगा।[7]

इस प्रकार यीशु को चेलों का पहला छोटा झुंड मिल गया (देखें 2:2)।[8] यूनानी शब्द के अनुसार ''चेला'' का मूल अर्थ ''शिष्य'' या सीखने वाला है। इसका इस्तेमाल सीखने के लिए किसी के पीछे चलने वाले के लिए किया जाता था। यीशु की इच्छा हम सब को अपने चेले बनाने की है।[9]

पहला आश्चर्यकर्म (यूहन्ना 2:1-11)

यीशु और उसके चेले गलील के उज़र में गए। तीसरे दिन, वे नासरत से कुछ दूर नतनएल के गृह-नगर (यूहन्ना 21:2) काना गलील नामक एक गांव में पहुंचे।[10] यहां वे एक विवाह समारोह में भाग लेने के लिए आए थे (2:1, 2)। यीशु उन लोगों के जीवनों में शामिल होता था, जिनके उद्धार के लिए वह आया था।

यीशु की माता मरियम भी वहीं थी (आयत 1)। अगली घटनाओं से यह संकेत मिलता है कि वह विवाह के भोज में सेवा करने में सहायता कर रही थी (देखें आयतें 3, 5)। शायद यह उसके किसी रिश्तेदार या मित्र का विवाह था।

जश्न के दौरान सामान खत्म हो गया। हो सकता है कि जितने लोग बुलाए हुए थे, उनसे अधिक आ गए हों। जो भी हो, हालात परेशान करने वाले हो गए थे। मरियम अपने पुत्र के पास आकर कहने लगी, ''उनके पास दाखरस नहीं रहा'' (आयत 3)। वह उससे ज़्या चाहती थी, हम नहीं जानते; ज़्योंकि इससे पहले यीशु ने कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया था (आयत 11)। परन्तु शायद वह इतने वर्षों से उसी पर निर्भर थी और उसे लगा कि वह *कुछ* कर सकता है।

यीशु का उज़र महत्वपूर्ण है: ''हे महिला मुझे तुझ से ज़्या काम? अभी मेरा समय नहीं आया''[11] (आयत 4)। उस समाज में, अपनी माता को ''हे महिला'' कहना अपमानजनक नहीं था।[12] (बाद में इस शज़्द का इस्तेमाल कोमलता से किया जाता था [यूहन्ना 19:26]।) तौ भी मसीह के शज़्द कुछ डांट डपट वाले लगते हैं। अर्नेस्ट हाउज़र ने लिखा है कि यहां मसीह की बात से ''सचेत किया जाता है कि आगे से उसके सांसारिक बंधन छूट जाएंगे।''[13]

मरियम शांत नहीं बैठी। उसने सेवकों से कहा, ''जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना'' (आयत 5)–जो हम सबके लिए भी अच्छी सलाह है! यीशु ने स्पष्टतया फैसला कर लिया था कि उसके आश्चर्यकर्मों की शज़्तियों का इस प्रकार इस्तेमाल करना उनके उद्देश्य (भलाई करना) से मेल खाएगा और केवल सेवकों को ही इसका पता लगने से उसकी ''घड़ी'' (उसकी मृत्यु का समय) जल्दी नहीं आएगी। फिर उसने पानी को दाखरस में बदलने का प्रसिद्ध आश्चर्यकर्म किया (आयतें 6–10)।

इस बात पर काफ़ी विवाद पैदा होता है कि इस घटना से यीशु द्वारा शराब का इस्तेमाल करने की अनुमति देने की बात सिद्ध होती है, नहीं। एक पक्ष ''दाखरस'' शज़्द पर और आयत 10 की ज़ोर देता है। दूसरा पक्ष यह ध्यान दिलाता है कि यीशु ने 120–180 गैलन मय बनाई;[14] यदि उस मय में काफ़ी अलकोहल था,[15] तो इसका अर्थ यह है कि वह शराब पीने को उत्साहित कर रहा था, जिसकी पूरी बाइबल में निंदा की गई है (नीतिवचन 20:1; गलातियों 5:21)। परन्तु इस पद से यह प्रश्न सुलझता नहीं है।[16] यूनानी शज़्द (*oinos*) जिसका अनुवाद ''दाखरस'' हुआ है, सामान्यतया इसका इस्तेमाल wine के लिए ही किया जाता है और पुराने नियम[17] में भी इसका इस्तेमाल दाख के रस के लिए ही हुआ है (यशायाह 65:8)।

ऐसे झगड़े में आयत की यह बात भूल जाती है कि छोटे से गुमनाम गांव में चुपके से, लगभग किसी का ध्यान खींचे बिना यीशु अपनी आत्मिक मांसपेशियां दिखा रहा था। उसने अपना पहला आश्चर्यकर्म किया था!

आज हम किसी भी असाधारण लगने वाली बात को बिना सोचे-समझे ''आश्चर्यकर्म'' या चमत्कार कह देते हैं। परन्तु बाइबल इस शज़्द का इस्तेमाल एक अलौकिक कार्य के लिए विशेष अर्थ में करती है। यीशु ने निश्चित तौर पर जीवन के अपने पहले तीस वर्षों में *अद्‌भुत* कार्य किया था, परन्तु अपनी *अलौकिक* शज़्तियों का इस्तेमाल उसने यहां पहली बार किया था। इसलिए अलौकिक का अर्थ समझाना हमारी समझ से बाहर है। विश्वास से

ही हम इस विषय पर बाइबल की बात को मानते हैं।

यूहन्ना ने इस घटना के महत्व को तुच्छ नहीं जाना। उसने इस आश्चर्यकर्म के लिए अपना पसन्दीदा शब्द ''चिह्न''[18] (आयत 11क) इस्तेमाल किया। जो कुछ यीशु ने किया, वह इस बात का चिह्न था कि यीशु सचमुच परमेश्वर की ओर से आया है! यूहन्ना ने ध्यान दिलाया है कि मसीह ने ''अपनी महिमा प्रकट की'' थी (आयत 11क)! यह उन सामर्थ के कामों का पूर्व अनुभव था, जो उसने अभी करने थे। इसके अलावा, इस पहले ''चिह्न'' के द्वारा, ''उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया'' (आयत 11ख)। मसीहा के रूप में यीशु पर उनका विश्वास बढ़ा!

कफ़रनहूम में पहला निवास (यूहन्ना 2:12)

काना से, यीशु उज़र और पूर्व की ओर गया।[19] ''इसके बाद वह और उसकी माता और उसके भाई और उसके चेले कफ़रनहूम को गए और वहां कुछ दिन रहे'' (आयत 12)। कफ़रनहूम बैतसैदा के निकट गलील सागर पर एक व्यस्त व्यापारिक नगर था, जो पतरस और अन्द्रियास का गृहनगर था (यूहन्ना 1:44)।[20] यह नगर पलिश्तीन को जाने वाले पूर्व-पश्चिम राजमार्ग से दूर नहीं था। बाद में यह यीशु की गतिविधियों का केन्द्र बन जाना था (मत्ती 4:13)।

पहला फसह (यूहन्ना 2:13-25)

यीशु ने फसह के पर्व[21] में भाग लेने के लिए कफ़रनहूम का अपना दौरा छोटा कर दिया। हम आश्वस्त हो सकते हैं कि यीशु बारह वर्ष का होने के बाद इस पर्व में भाग लेने हर साल आता था (लूका 2:41, 42), परन्तु यह उसकी सार्वजनिक सेवकाई का पहला फसह था।[22] यह यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के आरम्भ होने के बाद उसका लोगों में पहली बार आना था। इसका आरम्भ मन्दिर को उसके पहली बार शुद्ध करने के साथ नाटकीय ढंग से हुआ![23]

संसार भर के यहूदियों के आने के कारण बड़े यहूदी त्यौहारों में मन्दिर का कारोबार काफी बढ़ जाता था (देखें प्रेरितों 2:5, 9-11क)। हर यहूदी के लिए आधा शेकेल मन्दिर का वार्षिक कर देना आवश्यक था।[24] मन्दिर के अधिकारी यह कर विदेशी सिक्कों के माध्यम देने की अनुमति नहीं देते थे, जिस कारण मन्दिर में पैसे का लेन-देन करने वालों की आवश्यकता पड़ती थी। हर यहूदी के लिए पर्व के दिनों के दौरान विशेष पशु बलिदान करने के लिए रखने होते थे।[25] दूसरे देशों से आने वाले अधिकतर लोग अपने साथ पशु नहीं ला सकते थे, जिस कारण उन्हें वहां आकर पशु खरीदने पड़ते थे। इससे मन्दिर में जानवरों की बिक्री होने लगी। ये व्यापारी स्पष्टतया अन्यजातियों के आंगन में यह काम करते थे।[26] हो सकता है कि उन्होंने विश्व-पर्यटकों के लिए यह सेवा आरम्भ की थी, परन्तु धीरे-धीरे यह याजकों द्वारा चलाई जाने वाली धन के लेन-देन की परम्परा में बदल गई।

परमेश्वर के घर और परमेश्वर की इच्छा के लिए यीशु के पहले सार्वजनिक कार्य से

उसकी लगन का पता चला। व्यापारियों को बाहर निकालते हुए उसने कहा, ''मेरे पिता के भवन को व्यापार का घर मत बनाओ'' (आयत 16ख)। बाद में, एक ऐसे ही अवसर पर, उसने कहना था, ''लिखा है, कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा; परन्तु तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो'' (मत्ती 21:13)।

यीशु के पहले सार्वजनिक कार्य से परमेश्वर द्वारा दिए गए उसके अधिकार को भी बताया गया (मत्ती 3:17; देखें मत्ती 7:29)। मन्दिर के परेशान अधिकारियों ने इस अधिकार को चुनौती दी। द न्यू लिविंग ट्रांसलेशन में यूहन्ना 2:18 का अनुवाद इस प्रकार है, '' 'यह सब करने का अधिकार तुझे किस ने दिया है?' यहूदी अगुवों ने पूछा। 'यदि तुझे यह अधिकार परमेश्वर से मिला है, तो इसे साबित करने के लिए हमें कोई चिह्न दिखा।' ''

देखने और विश्वास करने की इच्छा रखने वालों के लिए यीशु ने अपनी सेवकाई के दौरान कई चिह्न दिखाए (देखें आयत 23), परन्तु सबसे महत्वपूर्ण आश्चर्यकर्म उसका अपना पुनरुत्थान था (रोमियों 1:4)। उसने इस प्रकार उज़र दिया, ''इस मन्दिर को ढा दो,[27] और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा'' (यूहन्ना 2:19)। ''उस ने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था'' (आयत 21), परन्तु उसके शत्रु उसकी बात न समझ सके (आयत 20[28]), उन्हें यही लगा कि वह संगमरमर और सोने से बनी इमारत को ठीक करने की बात कर रहा है।[29]

यरूशलेम में रहते ही, यीशु ने अपने पहले सार्वजनिक आश्चर्यकर्म किए (आयत 23)। हमें यह नहीं बताया गया कि वे आश्चर्यकर्म कैसे थे, परन्तु उनमें बीमारों को भी चंगा किया गया होगा (मत्ती 4:23)।[30] विश्वासियों का समूह बढ़ने लगा (यूहन्ना 2:23), परन्तु यीशु जानता था कि उनका विश्वास थोड़ा है (आयतें 24, 25)। द लिविंग बाइबल में आयत 25 को इस प्रकार लिखा गया है, ''उसे बताने की आवश्यकता नहीं थी कि मानवीय स्वभाव कितना परिवर्तनशील है!''

पहला विस्तृत उपदेश (यूहन्ना 3:1-21)

जब यीशु यरूशलेम में ही था तो ''निकुदेमुस नामक एक मनुष्य''[31] रात के समय यीशु के पास आया (आयतें 1, 2)। इस तथ्य का कि निकुदेमुस ''रात को आया'' कुछ महत्व हो सकता है (यूहन्ना 19:39); शायद इससे उसकी किसी घबराहट का संकेत मिलता है।[32] वह उनमें से एक था, जो यीशु के आश्चर्यकर्मों से प्रभावित थे (2:23)। उसने कहा, ''हे रब्बी,[33] हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है; ज़्योंकि कोई इन चिह्नों को, जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता'' (3:2)।

यीशु, जो मनुष्यों के मन के विचार को पढ़ सकता था (2:24, 25), जानता था कि निकुदेमुस उसके पास ज़्यों आया है। इस यहूदी अगुवे के मन में स्पष्टतया मसीहा के राज्य के विषय में प्रश्न थे। उसके मन में राज्य के बारे में यहूदियों में पाई जाने वाली गलतफहमियां भी थीं। इसलिए मसीह ने उज़र दिया, ''मैं तुझ से सच-सच[34] कहता हूं, यदि कोई नये सिरे

से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता'' (3:3)।

नये सिरे से जन्म का चित्र चौंकाने वाला है और इससे उस नाटकीय परिवर्तन का पता चलता है, जो यीशु का चेला बनने वाले किसी व्यक्ति में होना आवश्यक है। परन्तु मसीह का उद्देश्य चेले बनने की शर्तों की रूपरेखा देना नहीं था।[35] कलीसिया की स्थापना के बाद, मसीही बनने के लिए कभी किसी को ''नये सिरे से जन्म लेने'' के लिए नहीं कहा गया था। इसके बजाय, निष्कपटता से पूछने वालों को विश्वास करने, मन फिराने और बपतिस्मा लेने के लिए कहा जाता था (प्रेरितों 2:37, 38; 22:16)।[36]

बल्कि, यीशु का उद्देश्य मसीहा के राज्य की प्रकृति पर ज़ोर देना था कि यह सांसारिक राज्य नहीं होना था, जिसमें शारीरिक जन्म के द्वारा प्रवेश मिलता हो (जैसे इस्राएल का राज्य था)। यह तो स्वर्गीय राज्य था, जिसमें स्वर्गीय नव-जन्म (या स्वज़ाव बदलने) से प्रवेश मिलता है। यह ऐसा राज्य नहीं था, जिसमें मानवीय सेनाएं होती हैं, बल्कि इसमें परमेश्वर के आत्मा द्वारा कार्य होना था (आयतें 6-8)।[37] निकुदेमुस के लिए ये बातें नई थीं, और उसे इन्हें समझना कठिन लगा (आयतें 4, 10)।

यूहन्ना के वृज़ांत से मेल खाते विस्तृत भाग के बाद यीशु का मूल संदेश है। यूहन्ना की पुस्तक अपने भावनात्मक खण्डों के लिए प्रसिद्ध है। ये शज़्द निकुदेमुस के साथ यीशु की चर्चा का जारी रहना हैं या वे परमेश्वर की प्रेरणा से की गई यूहन्ना की टिप्पणियां हैं, हम नहीं जानते।[38] जो भी हो, उनमें इस तथ्य सहित कि यीशु ''उठाया जाना'' (क्रूस पर) (आयत 14) था और यह विश्वास करना कि यीशु ही मसीह है (आयतें 15, 16, 18) विचार उत्पन्न करने वाली सच्चाइयां हैं।

इस उपदेश में पवित्र शास्त्र की सबसे प्रसिद्ध आयत है: यूहन्ना 3:16, ''बाइबल की'' तथाकथित ''सुनहरी आयत।'' इसमें उद्धार के बारे में (जैसा कि कुछ लोग दावा करते हैं) वह सब कुछ नहीं है, जो हमें जानने की आवश्यकता है, परन्तु यह हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम का एक सुन्दर और शज़्तिशाली कथन है।

यहूदिया में प्रारज़्भिक सेवकाई (यूहन्ना 3: 22-36)[39]

यरूशलेम में पर्व के बाद, यीशु और उसके चेले प्रचार करने और शिक्षा देने के लिए यहूदिया देश में चले गए। इस सेवकाई के समय के अनुमान तीन से आठ माह के बीच लगाए जाते हैं। इस काल के सज़्बन्ध में हमें दो छोटी-छोटी जानकारियां मिलती हैं। पहली, मसीह अपने चेलों के साथ ''समय बिता रहा था!'' वह उन्हें सिखा रहा और अपने बारे में जानने का अवसर दे रहा था। दूसरा, वह अपना मार्ग तैयार करने वाले की तरह ''बपतिस्मा'' दे रहा था (आयत 22)।[40]

स्पष्टतया यहूदिया में यीशु की सेवकाई सफल थी, ज़्योंकि यूहन्ना के चेलों ने शिकायत की, कि ''देख, वह बपतिस्मा देता है, और सब उसके पास आते हैं'' (आयत 26)। अगले अध्याय में बताया गया है कि ''यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता था और उन्हें बपतिस्मा देता था। (यद्यपि यीशु आप नहीं, वरन उसके चेले बपतिस्मा देते थे)'' (4:1, 2)।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु की सफलता का स्वागत किया, परन्तु उसके चेलों ने नहीं, जो उसके साथ रहते थे। वे द्वेष से भर गए थे (आयत 26)। द्वेष से भरे सेनापतियों के कारण युद्ध जीते और हारे जाते रहे हैं। द्वेष प्रभु के कार्य के समन्वय के लिए बड़ा खतरा है।

यूहन्ना के चेलों की शिकायतों ने यूहन्ना को फिर से यह परखने के लिए उकसाया कि यीशु कौन है (आयतें 27-35)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु को मसीहा मानने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया था:[41] ''जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है'' (आयत 36)। ध्यान दें कि विश्वास करने और आज्ञा मानने की अवधारणाओं का अदल-बदल कर इस्तेमाल किया गया है।[42] विश्वास, जिससे उद्धार होता है आज्ञाकारी विश्वास ही है (याकूब 2:20; देखें रोमियों 1:5; 16:26)।

अपनी भूमिका को एक बार और परिभाषित करते हुए (आयतें 28, 29), यूहन्ना ने पवित्र शास्त्र की सबसे उदार बातें कहीं: ''अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूं'' (आयत 30)। आप चाहे जो भी हों, एक समय आएगा जब आप का घटना और किसी दूसरे का आपके स्थान पर बढ़ना आवश्यक होगा। हम में से यदि हर कोई बिना शत्रुता के, सज़्मानजनक ढंग से यह कह सके कि ''अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूं'' तो बहुत सी दुर्भावनाओं से बचा जा सकता है।

सारांश

कुछ लोग यह कहकर कि ''मैंने कभी किया नहीं है'' नई पहल करने से इनकार करते हैं। यदि ऐसा तर्क मान्य होता, तो कभी कोई कोशिश ही न करता। एक बच्चा पहला कदम न उठा पाता या पहला शज़्द न बोल पाता। बच्चा कभी पढ़ना न सीख पाता। पुरुष और स्त्रियां नई-नई बातें न सीख पाते। जो आज माता-पिता हैं, उनके बच्चे न होते। याद रखें: हर चीज़ के आरज़्भ के लिए पहली बार आवश्यक होती है। यदि नया कार्य अच्छा और आवश्यक है, तो इसे करने का *प्रयास करें*। आपको अपने आप पर हैरानी हो सकती है!

नोट्स

इस पाठ में वे बहुत सी आयतें हैं, जिनसे महान प्रवचन तैयार होते हैं। कुछ विचार इस प्रकार हैं।

अन्द्रियास और फिलिप्पुस दूसरे लोगों को यीशु के पास कैसे लाए, पर चर्चा हमारे लिए अपने परिवारों और मित्रों को मसीह के पास लाने की आवश्यकता पर प्रवचन आरज़्भ करने के लिए हो सकती है।

''परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते'' देखने की नतनएल को यीशु की बात का इस्तेमाल (यूहन्ना 1:51) उत्पज़ि 28:10-17 में मूल ''सीढ़ी'' से क्रूस की तुलना करते हुए ''याकूब की सीढ़ी'' पर प्रवचन के लिए आधार के रूप में किया जा सकता है।

सेवकों को मरियम के शब्द, ''जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना'' (2:5) प्रभु की *किसी भी* बात के लिए जो वह हम से करने के लिए कहे, मानने के महत्व पर प्रवचन का आरम्भ हो सकते हैं।

निकुदेमुस पर एक पात्र-अध्ययन का प्रवचन दिया जा सकता है। बाद में हमें वह 7:50-52 और 19:39 में मिलता है। आप उसके बढ़ते विश्वास और बढ़ती दृढ़ता पर ज़ोर दे सकते हैं।

अधिकतर प्रचारकों के पास ''नया जन्म'' पर कम से कम एक प्रवचन अवश्य होता है। आप नीचे दिए गए अतिरिक्त लेख के विचारों से प्रवचन को विस्तार दे सकते हैं।

3:14 पर आधारित एक प्रवचन दिया जा सकता है। पीतल के सांप और क्रूस पर मसीह में समानताएं बनाई जा सकती हैं।

टिप्पणियां

[1]यह विश्वास करने के कि यह यूहन्ना ही था, कई कारण हैं: (1) आगे के विवरण ऐसे हैं, जो किसी प्रत्यक्षदर्शी द्वारा ही दिए गए होंगे; (2) अपना नाम न देना यूहन्ना की आदत थी (अगली टिप्पणी देखें); (3) यदि यह यूहन्ना नहीं था, तो उसने अपने चेले होने के लिए बुलाहट का कोई विवरण नहीं दिया। [2]सात अन्य अवसरों पर, उसने अपना नाम नहीं दिया (यूहन्ना 13:23; 19:26, 35; 20:2-8; 21:7, 20, 24)। [3]यहूदी लोग समय की गणना सूर्यास्त से सूर्योदय और सूर्योदय से सूर्यास्त तक करते थे। [4]ज़्योंकि यह यरूशलेम के विनाश के बहुत बाद लिखा गया और ज़्योंकि यूहन्ना ने बाद में रोमी समय का इस्तेमाल किया (यूहन्ना 20:19 पर आगे एक पुस्तक में टिप्पणियां देखें), इसलिए अधिकतर लेखकों का मानना है कि यह समय 10 बजे प्रात: ही होगा। [5]जैसा कि हम देखेंगे, वे जिन शब्दों का इस्तेमाल करते थे, उन्हें *पूरी तरह* नहीं समझते थे-परन्तु, कम से कम उन्हें यह अहसास था कि वह मसीहा के सम्बन्ध में पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं का पूरा होना था। [6]''परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरने'' (आयत 51) का यीशु का रहस्यमय कथन सम्भवतया पुराने नियम की याकूब की सीढ़ी वाली कहानी पर आधारित था (उत्पत्ति 28:12)। अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के द्वारा, यीशु ने स्वर्ग तक जाने के लिए मनुष्यों के लिए परमेश्वर की ''सीढ़ी'' होना था। [7]इस निष्कर्ष के अलग-अलग कारण हैं। उनमें से एक तथ्य यह है कि यीशु के आरम्भिक चेलों में से शेष को बाद में उसके प्रेरितों के रूप में चुना गया था। जैसे जे. डब्ल्यू. मैज़र्वे ने ध्यान दिलाया है, ''किसी की भी सराहना नतनएल जितनी नहीं की गई'' (जे. डब्ल्यू. मैज़र्वे एण्ड फिलिप्प वाई पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* [सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1914], 111)। [8]यूहन्ना 1:35-51 में पांच चेलों का विशेष उल्लेख है: चार का नाम दिया गया है और एक का नाम नहीं दिया गया, जो सम्भवतया इस पुस्तक का लेखक ही था। कुछ लोगों का मत है कि संदर्भ से यह संकेत मिलता है कि यूहन्ना ने भी अपने भाई याकूब को ढूंढ़ा। यदि ऐसा है, तो उज़र की ओर यीशु के जाते समय कम से कम छह चेले थे। [9]यीशु अक्सर चेले होने की चुनौती की बात करता था (लूका 14:26, 27, 33; यूहन्ना 15:8)। कलीसिया की स्थापना हो जाने के बाद, कलीसिया के सदस्यों के लिए सबसे अधिक प्रचलित शब्द ''चेले'' था (प्रेरितों 6:1, 2, 7; 9:1)। [10]''मसीह के जीवन के दौरान पलिश्तीन'' मानचित्र में से यह संकेत मिलता है कि काना की परम्परागत जगह, नासरत के लगभग चार मील उज़र पूर्व की ओर थी। कुछ विद्वानों को यह विचार करना अधिक अच्छा लगता है कि यह नासरत के उज़र में दस या बारह मील का क्षेत्र था।

[11]''समय'' शब्द यूहन्ना के वृज़ांत में कई बार आया है, जो क्रूस पर यीशु की मृत्यु के समय की ओर संकेत है। (देखें 2:4; 4:21, 23; 5:25, 28; 7:30; 8:20; 12:23, 27; 13:1.) यीशु जानता था कि आश्चर्यकर्मों से उसके शत्रुओं का ध्यान खिंचेगा जो जल्दी उसकी मृत्यु का कारण होगा। [12]जहां मैं रहता हूं, वहां मां को ''हे महिला या हे नारी'' कहना अपमानजनक होगा। [13]अर्नेस्ट ओ. हाउज़र, ''मेरी, मदर ऑफ़ क्राइस्ट,'' *रीडर'स डाइजेस्ट* (दिसम्बर 1971): 171. [14]औपचारिक धोने के लिए वहां छह मटके पानी के थे (देखें मरकुस 7:3)। यूनानी शास्त्र में यह टिप्पणी है कि हर मटके में दो से तीन मन पानी आता था और उन्हें लबालब भर दिया गया था (यूहन्ना 2:7)। आज के हिसाब से, प्रत्येक मटका 75 से 115 लीटर का होगा। [15]कई बार यह ध्यान दिलाया जाता है कि उस देश में आम व्यक्ति एक भाग मय और छह भाग पानी मिलाकर पीता था। [16]उस दाखरस में अमकोहल की मात्रा थी या नहीं, आयत 10 के आम तौर पर उद्धृत किए जाने वाले शब्द सही होंगे। [17]अर्थात, पुराने नियम के यूनानी अनुवाद (सप्तति) में यह शब्द आता है। [18]''आश्चर्यकर्मों'' और ''चिह्नों'' पर अधिक जानकारी के लिए इस पुस्तक में ''यूहन्ना की पुस्तक: मसीह, परमेश्वर का पुत्र'' वाला पाठ देखें। [19]''मसीह के जीवन के दौरान पलिश्तीन'' का मानचित्र देखें। [20]स्पष्टतया, पतरस और अन्द्रियास बाद में कफ़रनहूम में चले गए (मरकुस 1:21, 29)।

[21]फसह का पर्व मिस्र में परमेश्वर के इस्राएलियों ''के ऊपर से'' गुज़र जाने को याद दिलाता था, जिन्होंने अपने द्वार के दोनों अलंगों और चौखट के सिरों पर मेमने का लहू लगाया था (निर्गमन 12:1-28)। इस पुस्तक में ''यहूदियों के पर्व'' चार्ट देखें। [22]यूहन्ना में वर्णित फसह के पर्वों के महत्व के लिए इस पुस्तक में पहले दिए पाठ ''मसीह की व्यक्तिगत सेवकाई कितनी देर की थी?'' देखें। [23]इसे उसकी सेवकाई के अन्तिम सप्ताह में मन्दिर को शुद्ध करने से न मिलाएं (मत्ती 21:12, 13)। [24]यहूदी अधिकारी इसे निर्गमन 30:13 पर आधारित मानते थे, यद्यपि ऐसा कोई संकेत नहीं है कि इसके स्थायी तौर पर होने की शर्त थी। मत्ती 17:24-27 की घटना इस कर के देने के बारे में थी। [25]इस पुस्तक में ''यहूदियों के पर्व'' वाला चार्ट देखें। [26]''मन्दिर'' के लिए दो यूनानी शब्द हैं। एक (*naos*) मन्दिर के पवित्र भाग के लिए था। दूसरा (*hieron*) पूरे मन्दिर के प्रांगण के लिए था, जिसमें अन्यजातियों का आंगन भी था। यहां बाद वाले शब्द का इस्तेमाल किया गया है। अन्यजातियों के आंगन के लिए, इस पुस्तक में मन्दिर का मानचित्र देखें। [27]अनुवादित शब्द ''मन्दिर'' के लिए यूनानी शब्द यहां *naos* है। [28]यीशु के जन्म के समय की गणना का हिसाब लगाते समय छयालीस वर्षों के हवाले का इस्तेमाल किया जाता है। इस पुस्तक में ''मसीह का जन्म कब हुआ था'' पाठ देखें। [29]यीशु की इस बात से वे प्रभावित हुए। भविष्यवाणी की उनकी गलत व्याख्या के कारण मसीह पर मुकदमा हुआ (मरकुस 14:58)। [30]ऐसा कोई संकेत नहीं है कि यीशु इस समय दुष्टात्माओं को निकाल रहा था। इसका पहला लिखित वृज़ांत मरकुस 1:23-28 और लूका 4:33-37 में मिलता है। उस अवसर पर आश्चर्य से यह संकेत मिल सकता है कि दुष्टात्माओं को निकालना यीशु की सामर्थ का एक नया प्रदर्शन था। निकुदेमुस स्पष्टतया महासभा का एक सदस्य था (देखें यूहन्ना 7:45-52)।

[31]महासभा पर अधिक जानकारी के लिए इस पुस्तक में पहले आए एक पाठ ''संसार जिसमें मसीह आया'' में देखें। [32]दूसरी ओर, यही एक बार होगा जब निकुदेमुस और यीशु इकट्ठे हुए हों। [33]''रब्बी'' सम्मान का पद था और निकुदेमुस ने यीशु के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल किया। [34]''सच-सच'' ''आमीन'' के लिए यूनानी शब्द का अनुवाद हो सकता है, जिसका अर्थ ''ऐसा ही है'' हो सकता है। शब्द को दोहराने का अर्थ उस पर ज़ोर देने का ढंग है कि ''जो मैं कहने वाला हूं वह बिल्कुल *सच* है!'' [35]मसीही बनने की शर्तें नये जन्म पर यीशु के शब्दों में *मिलती* हैं जिसमें विश्वास का कई बार उल्लेख है (आयतें 15, 16)। वर्षों से अधिकतर लोग इस पर सहमत हो गए हैं कि ''जल से जन्म'' (आयत 5) बपतिस्मे के लिए ही है। तो भी, यीशु का ज़ोर इन शर्तों पर नहीं बल्कि राज्य की प्रकृति पर था। [36]पतरस ने बाद में मसीही लोगों को याद दिलाया कि जब उन्होंने इन आज्ञाओं का पालन किया था, तो उनका ''नया जन्म'' हुआ था (देखें 1 पतरस 1:22, 23)। [37]यीशु का हवा का उदाहरण शब्दों का खेल है: ''हवा'' के लिए यूनानी शब्द ''आत्मा'' के लिए यूनानी शब्द की तरह ही है। हम हवा को देख नहीं सकते, परन्तु इसके प्रभाव को देख सकते हैं। यही बात आत्मा के काम की है। [38]सबसे आसान ढंग उन्हें यीशु के शब्दों के रूप में लेकर समझना

है, और NASB में ऐसा ही किया गया है। [39]बाद में अपनी सेवकाई में, यीशु ने तीन या इससे अधिक माह यहूदिया में शिक्षा देनी थी। [40]यह बपतिस्मा स्पष्टयता यूहन्ना के बपतिस्मे को विस्तार देना था, इसलिए यह तैयारी का बपतिस्मा भी था।

[41]इस पद में, निकुदेमुस के साथ यीशु के वार्तालाप की तरह यह जानना कठिन है कि बोलने वाले के शब्द कहां खत्म होते हैं और सुसमाचार के लेखक कहां से आरब्भ होते हैं। NASB में इन सब को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के शब्द कहा गया है। [42]KJV में इस आयत में ''believeth'' शब्द दो बार आया है, परन्तु बेहतर यूनानी हस्तलेखों में दो अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल हुआ है।